सलमा रफीक के फावड़े से धरा पर बही सरस्वती की धारा

Dainik Bhaskar 06.05.2015 P.No. 2

सफलता । मुगलवाली गांव में सात फीट खुदाई होते ही फूट पड़ी सरस्वती नदी से ठं मीठे जल की धारा, छल्लौर रोलाहेड़ी में खुदाई जारी

पोपीन पंवार. यमुनानगर

अबदेश के लोगों को लुप्त हुई पवित्र सरस्वती नदी का ठं मीठा जल शीघ्र मिल सकेगा। मुगलवाली गांव में खुदाई के समय सरस्वती नदी से ठं मीठे जल की धारा फूट पड़ी है। धरा पर आई सरस्वती नदी को देखने बड़ी संख्या में आसपास के लोग मौके पर पहुंच गए।

ीसी यमुनानगर एसएस फूलिया एसीएम जगाधरी प्रेम चंद, बिलासपुर एसीएम पूजा चांवरिया ने मौके पर पहुंच कर निकले पानी का जायजा लिया और अपनी संतुष्टि के लिए कई स्थानों पर खुदाई करवाई। पानी निकलने की सूचना दिन में साढ़े 12 बजे प्रशासन को मिली थी। मुस्लिम दंपती सलमा रफीक के फावड़े से धरा पर सरस्वती नदी का ठं-मीठा पानी आया। चमकीले रेत, नीली बजरी मिश्रित खनिज के पानी का रंग पवित्र नदियों जैसा ही है। सरस्वती को धरा पर लाने के लिए ाड़ क्षेत्र के गांव मुगलवाली, छल्लौर रोलाहेड़ी में खुदाई कार्य चल रहा है।

खुदाई के दौरान मंगलवार को मुगलवाली गांव में सरस्वती नदी में जल की धारा निकल आई। खुदाई कार्य का निरीक्षण कर रहे सचिव बलकार सिंह ने बताया कि यहां करीब दस फीट तक खुदाई की जा रही है। जैसे ही मजदूर खुदाई करते हुए सात फीट तक पहुंचे तो जमीन में हलकी सी नमी दिखाई दी। दंपती सलमा रफीक ने इस बारे में बताया। आगे खुदाई की तो ठं मीठे पानी की धार फूट पड़ी। देखते ही देखते बड़ा गड्ा पानी का भर गया। उन्होंने इसकी सूचना बीीपीओ नरेंद्र सिंह ीीपीओ गगनदीप सिंह को दी। ीसी यमुनानगर ॉक्टर एसएस फूलिया ीीपीओ गगनदीप ने मौके पर पहुंच कर खुदाई के समय निकले जल का जायजा लिया।

आठ स्थानों पर खुदाई की, हर जगह पानी निकला:

□□ीपीओ गगन दीप सिंह का कहना है कि खुदाई के दौरान जल धारा जांचने के लिए आठ स्थानों पर खुदाई की गई है। हर स्थान पर सरस्वती नदी की जल धारा निकली है। इस बारे में पुरातत्व विभाग को सूचित कर दिया गया है। बुधवार को उनकी टीम मौके पर आएगी।

मेरे लिए सबसे बड़ी खबर है

सरस्वती शोध संस्थान के चेयरमैन 88 वर्षीय दर्शन लाल जैन की 15 साल के सं□र्ष के बाद सीएम मनोहर लाल ने सरस्वती नदी की खुदाई के लिए 50 करोड़ रुपए की मंजूरी दी। 21 अप्रैल को स्पीकर कंवरपाल गुर्जर ने खुदाई का काम शुरू करवाया और 15 दिन बाद खुदाई के दौरान पानी की जल धारा निकल गए। जल धारा की सूचना मिलने पर जैन का कहना था कि उनके लिए यह सबसे बड़ी खबर है। इससे लगता है कि भगवान भी अब उनके साथ हैं।

मेरे लिए सबसे बड़ी खबर है : सरस्वतीशोध संस्थान के चेयरमैन 88 वर्षीय दर्शन लाल जैन की 15 साल के सं□र्ष के बाद सीएम मनोहर लाल ने सरस्वती नदी की खुदाई के लिए 50 करोड़ रुपए की मंजूरी दी।

21 अप्रैल को स्पीकर कंवरपाल गुर्जर ने खुदाई का काम शुरू करवाया और 15 दिन बाद खुदाई के दौरान पानी की जल धारा निकल गए। जल धारा की सूचना मिलने पर जैन का कहना था कि उनके लिए यह सबसे बड़ी खबर है। इससे लगता है कि भगवान भी अब उनके साथ हैं

आठ स्थानों पर खुदाई की, हर जगह पानी निकला: □□ीपीओगगन दीप सिंह का कहना है कि खुदाई के दौरान जल धारा जांचने के लिए आठ स्थानों पर खुदाई की गई है। हर स्थान पर सरस्वती नदी की जल धारा निकली है।

इस बारे में पुरातत्व विभाग को सूचित कर दिया गया है। बुधवार को उनकी टीम मौके पर आएगी।

तीन किमी की हो चुकी है खुदाई

15दिन में तीन किलोमीटर खुदाई की गई है। सोमवार को भी खुदाई के समय कुछ स्थानों पर पानी की बूंदें टपकी थी। उन्हें देख उम्मीद जगी थी कि सरस्वती नदी को धरा पर उतारने में कामयाबी मिलनी शुरू हो गई है। ज्ञात हो प्रशासन ने 21 अप्रैल को ही गांव रोलाहेड़ी से सरस्वती नदी की खुदाई का काम शुरू किया था। मुंगलवाली गांव के पूर्व सरपंच ह्रदय राम सरपंच सोमनाथ ने बताया कि प्राचीन समय में भी यहां अक्सर खुदाई के समय पानी निकल आता था। इससे सिंचाई पीने की जरूरतें पूरी होती थी। लेकिन कालांतर में जल स्तर नीचे खिसकने से यहां सरस्वती नदी जमीन में विलुप्त होगई। आदिबद्री में सरस्वती नदी का उद्गम स्थल है।

यमुनानगर में भी हरिद्वार की तरह आएंगे श्रद्धालु

Yamunanagar Bhaskar, 06.05.2015

रेवेन्यू वाली जमीन पर निकला नीला पानी साबित कर रहा कि यह सरस्वती का जल है : प्रशासन

सरस्वती नदी का इतिहास

तीर्थाटन के मानचित्र पर फूटा नया अंकुर

सिंचाई विभाग को सौंपा जांच का जिम्मा

भास्करन्यूज । यमुनानगर/ बिलासपुर

वैसेतोआदि बद्री की अपनी ख्याति है लेकिन यमुनानगर से अब एक नया अध्याय शुरू हुआ है। पौराणिक क्षितिज पर अब यमुनानगर सरस्वती के उद्गम स्थल के रूप में दुनिया में जाना जाएगा। हरियाणा के लिए यह किसी गौरवशाली पल से कम नहीं है। जैसे लोग हरिद्वार, संगम (इलाहाबाद) और बोधगया जैसे तीर्थस्थलों का भ्रमण करने के लिए जाते हैं, वैसे ही अब यमुनानगर आएंगे। यह इस लिहाज से भी महत्वपूर्ण है कि सदियों से लुप्त सरस्वती के मिलने से तीर्थाटन के मानचित्र पर नया अंकुर फूटा है। श्रद्धालुओं के लिए यह किसी चमत्कार से कम नहीं है।

यमुनानगर प्रशासन का कहना है कि इतनी कम गहराई (सात फीट) पर नीली बजरी चमकदार रेत और खनिज के मिश्रण वाला नीला पानी। मटके की तरह शीतल जल। एक नहीं आठ गड्ढे खोदकर देखे हंै। वह भी 20 से 25 फीट की दूर के अंतर पर। गड्ढे से पानी निकालते ही दोबारा से पानी भर जाता है। इस तरह से पानी केवल उस जमीन से निकल रहा है जाे रेवेन्यू रिकार्ड के हिसाब से सरस्वती नदी की है। दो तीन एकड़ दूर जाते ही नलकूप 200 फीट की गहराई पर लगा है। ये सब प्रमाण बता रहे हैं कि खुदाई के दौरान जमीन से निकला जल सरस्वती नदी का ही है। हालांकि डीसी ने इस मामले की जांच का जिम्मा सिंचाई विभाग के अधिकारियों को सौंपा है।

जगाधरी एसडीएम प्रेमचंद का कहना है कि नदी के कैंचमेंट क्षेत्र में वाटर लेवल 50 से 55 फीट है। उसके बाद इस क्षेत्र में पानी सैकड़ों फीट नीचे है। उनका कहना है कि भारतीय सस्कृति में गंगा,

यमुना, सरस्वती की तीन महत्वपूर्ण नदियों का जिक्र था। उसमें से आज विलुप्त हुई सरस्वती नदी को धरा पर उतर आई है।

ये होगा लाभ

आदिबद्रीमें माता मंत्रा देवी, आदिबद्री के केदारनाथ के प्राचीन मंदिर है। सरसवती नदी के पुनर्जीवित होने से यह क्षेत्र बड़े टूरिजम हब के रूप में विकसित हो जाएगा। हरिद्वार की तर्ज पर यहा पर श्रद्धालु आएंगे। प्रशासन के मुताबिक सदियों से राजस्व रिकार्ड में सरस्वती नदी का अस्थित्व रहा है। सीएम मनोहर लाल ने सरस्वती नदी के पुन: उत्थान के लिए 50 करोड़ का बजट दिया 15 दिनों में तीन किलोमीटर की खुदाई हो चुकी है। जिले में 90 किलोमीटर तक नदी खुदाई होनी है।

आदिबद्री में है उद्गम स्थल

जिलामुख्यालय से 46 किमी दूर आदिबद्री में पहाड़ों से जमीन पर सरस्वती नदी की धारा आती है। यह धारा िफलहाल बूंद बूंद में चल रही है। आदिबद्री से छह किमी की दूरी पर मुगलवाली गांव में सरस्वती नदी की खुदाई के दौरान अब जमीन से पानी निकला है। □टना का पता चलते □ीसी □ा□ एसएस फुलिया अन्य अधिकारी मुगलवाली गांव पहुंचे। स्वयं □ीसी ने एक गड्□ा अलग जगह खोदा और उसमें से 8-9 फीट पर पानी मिला। इसके पश्चात जगाधरी के एस□ीएम प्रेमचंद और □ी□ीपीओ गगनदीप सिंह ने भी गड्□ा खोदा और इन खड्□ों में से भरपूर मात्रा में पानी निकला। □ीसी ने कहा कि सरस्वती नदी का जिक्र पुरानों में मिलता था और आज वह हकीकत के रूप में धरती पर अवतरित हो गई है। 21 अप्रैल को जिला प्रशासन द्वारा मनरेगा परियोजना के तहत इस नदी की खुदाई शुरू की गई थी। उन्होंने कहा कि कुछ लोगों ने इस □टना को एक मिथक माना था परन्तु सरस्वती शोध संस्थान के दर्शन लाल जैन ने इस पर कड़ी मेहनत की और आज जिला प्रशासन,पंचायत एवं विकास विभाग की मेहनत के फलस्वरूप इस भ्रांति को सच्चाई में बदल दिया गया है।

बिलासपुर. सरस्वतीनदी की खुदाई के दौरान सात फीट की गहराई पर जाते ही रेत पानी निकल आता है। प्रशासन थोड़ी-थोड़ी दूरी पर ऐसे आठ गड्□ खोदे और हर जगह पानी निकला। सरस्वती एक विशाल नदी थी। पहाड़ों को तोड़ती हुई निकलती थी और मैदानों से होती हुई अरब सागर में जाकर विलीन हो जाती थी। इसका वर्णन ऋग्वेद में बार-बार आता है। वैदिक काल में इसमें हमेशा ल रहता था। सरस्वती नदी गंगा की तरह उस समय की विशालतम नदियों में से एक थी। उत्तर वैदिक काल और महाभारत काल में यह नदी बहुत कुछ सूख चुकी थी। तब सरस्वती नदी में पानी बहुत कम था। लेकिन बरसात के मौसम में इसमें पानी जाता था। भूगर्भी बदलाव की वजह से सरस्वती नदी का पानी गंगा में चला गया, कई विद्वान मानते हैं कि इसी वजह से गंगा के पानी की महिमा हुई, भूचाल आने के कारण जब जमीन ऊपर उठी तो सरस्वती का पानी यमुना में गिर गया। इसलिए यमुना में सरस्वती का जल भी प्रवाहित होने लगा। सिर्फ

इसीलिए प्रयाग में तीन नदियों का संगम माना गया, जबकि यथार्थ में वहां तीन नदियों का संगम नहीं है। वहां केवल दो नदियां हैं। महाभारत में मिले वर्णन के अनुसार सरस्वती नदी हरियाणा में यमुनानगर से थोड़ा ऊपर और शिवालिक पहाड़यों से थोड़ा सा नीचे आदिबद्री से निकलती थी। आज भी लोग इस स्थान को तीर्थस्थल के रूप में मानते हैं और वहां जाते हैं। किंतु आज आदिबद्री नामक स्थान से बहने वाली नदी बहुत दूर तक नहीं जाती एक पतली धारा की तरह जगह-जगह दिखाई देने वाली इस नदी को ही लोग सरस्वती कह देते हैं। वैदिक और महाभारत कालीन वर्णन के अनुसार इसी नदी के किनारे ब्रह्मावर्त था, कुरुक्षेत्र था, लेकिन आज वहां जलाशय हैं। जब नदी सूखती है तो जहां-जहां पानी गहरा होता है, वहां-वहां तालाब या झीलें रह जाती हैं और ये तालाब और झीलें अर्धचंद्राकार शक्ल में पाई जाती हैं। आज भी कुरुक्षेत्र में ब्रह्मसरोवर या पिहोवा में इस प्रकार के अर्धचंद्राकार सरोवर देखने को मिलते हैं, लेकिन ये भी सूख गए हैं। इसका इतिहास 4,000 वर्ष पूर्व माना जाता है। हरियाणा और पंजाब के साथ-साथ राजस्थान के जैसलमेर जिले में सरस्वती नदी की मौजूदगी के ठोस प्रमाण मिले हैं।

दिख गई सरस्वती नदी की जलधारा

Dainik Tribune On May - 5 - 2015

सुरेंद्र मेहता/हप्र
यमुनानगर, 5 मई

यमुनानगर के बिलासपुर स्थित गांव मुगलवाली में खुदाई में निकली सरस्वती नदी की जलधारा की जांच करते प्रशासनिक अधिकारी।

जिस इलाके में भूजल स्तर 85 फुट तक गिर गया हो, वहां महज 8-9 फुट पर ही जलधारा बह निकली। जरा सी गहराई पर पानी के स्रोत का मिलना उस 'भगीरथ प्रयास' का नतीजा है, जिसके तहत लुप्त हो चुकी सरस्वती नदी को तलाशा जा रहा है। इस अभियान के लिए खट्टर सरकार ने 50 करोड़ रुपये जारी किये थे। कई दिनों से सरस्वती के उद्गम स्थल माने जाने वाले आदिबद्री क्षेत्र में गांव मुगलवाली के पास चल रही खुदाई में मंगलवार शाम 4 बजे अचानक जलधारा फूट पड़ी। इसे सरस्वती नदी खोज अभियान की बड़ी सफलता माना जा रहा है। यहां खुदाई हरियाणा विधानसभा के अध्यक्ष कंवरपाल ने 21 अप्रैल को शुरू कराई थी। जलधारा फूटने की सूचना के तुरंत बाद उपायुक्त □ॉ. एसएस फुलिया सहित लोगों का हुजूम वहां उमड़ पड़ा। इस बीच जगाधरी के एस□ीएम प्रेमचंद और □ी□ीपीओ गगनदीप सिंह ने भी खुदाई की।

सरस्वती नदी के बारे में केवल पुराणों में ही जानकारी मिलती है। अब यह भी शोध का विषय बन गया है कि क्या सरस्वती की धारा ऊपर उठ रही है? आदिबद्री क्षेत्र सरस्वती का उद्गम स्थल माना जाता है। वहां से 5 किलोमीटर दूर रूलाहेड़ी से इस नदी की खुदाई शुरू की गयी थी। बताया जाता है कि यहां एक बड़ा जलाशय बनाया जाएगा और पहाड़ों पर होने वाली बरसात और सोम नदी के पानी को इकट्ठा कर सरस्वती नदी को एक बड़ी नदी के रूप में प्रवाहित किया जाएगा। मंगलवार को अधिकारियों ने यह करिश्मा देखा तो हर कोई नतमस्तक होकर खुदाई में योगदान देने लगा। डीसी डॉ एसएस फुलिया व एसडीएम के साथ डीडीपीओ ने कस्सी से जमीन को खोदना शुरू कर दिया।

जैसे-जैसे खुदाई बढ़ी, पानी की मात्रा बढ़ती चली गयी। सरस्वती की इस खोज में मुस्लिम समुदाय का अहम योगदान रहा। यहां खुदाई मुस्लिम परिवार के हाथों हुई। मेहनत का सकारात्मक नतीजा आते ही मुस्लिम समुदाय के इन लोगों ने बहुत खुशी जताई। बता दें कि यमुनानगर के इस स्थल का जिम्मा डीडीपीओ गगनदीप सिंह के पास था।

88 साल के बुजुर्ग की मेहनत का फल

सरस्वती नदी के मिलने पर जो जश्न आज मनाया जा रहा है, असल में वह 88 साल के बुजुर्ग एवं आरएसएस के पुराने कार्यकर्ता दर्शनलाल जैन की मेहनत का प्रतिफल है। उन्होंने सरस्वती नदी के लिये वर्ष 1999 में सरस्वती निधि शोध संस्थान बनाया और तब से अनवरत संघर्ष कर रहे हैं।

Yamunanagar admn's 'Saraswati found' claim questioned

Hindustan Times, May 06, 2015

FINDING WATER AT 8-9 FEET IS NOT UNUSUAL. WATER IS FOUND AT EVEN LESS DEPTH. WITHOUT SCIENTIFIC STUDY, AUTHORITIES MUST NOT MAKE ANY CLAIM ON THE BASIS OF A BELIEF. NARESH TULI, chairperson, department of geology, PU

YAMUNANAGAR: Experts have raised serious doubts on a claim made by the Yamunanagar administration on Tuesday that water traces found during the digging on the dry riverbed is actually the ancient inactive Saraswati river.

Yamunanagar deputy commissioner SS Phulia, who earlier made the announcement about the so-called finding, told Hindustan Times that it was on the basis of an 'assumption and popular' belief that water traces were announced as Saraswati.

"As you have rightly pointed out, we may rope in geologists to get the spots examined for further details," said the DC.

Geologists said that the authorities should have examined the spots scientifically before associating it with a river that ceased to flow 10,000 years ago.

With a view to promoting religious and heritage tourism in the Kurukshetra circuit, the Manohar Lal Khattar government had started creating a new water channel on the dry bed.

Initially, the project to 'revive' Saraswati was announced by the previous Bhupinder Singh Hooda government and digging of a new water channel had started in Kurukshetra district.

Located near Bilaspur subdivision, about 40 km from here, Adi Badri is considered to be the site where the Saraswati river was believed to have entered the plains after flowing in the Himalayas.

Excavation programme had started from Adi Badri up to Pehowa in the adjoining Kurukshetra district.

On Tuesday, as workers were removing earth at village Mugalwali, water stared oozing out of a seven-feet deep trench. As similar water traces were spotted in 8-9 other spots in the adjoining areas, DC Phulia immediately announced it as the ancient Saraswati. Phulia and other district officials also offered ladoos to the 'holy waters'.

Yamunanagar district administration also immediately issued press releases along with photographs of ‘discovery’.

However, talking to Hindustan Times, geologists said that it was premature to lable it as an ancient river. Naresh Tuli, chairperson of department of geology, Panjab University, Chandigarh, said that before making any such statement, the administration should have got examined the spots by geologists.

“Finding water at 8-9 feet is not unusual. Shallow aquifer is a geological condition where water is found at even less than the said depth. But without any scientific study, the authorities must not make any claim merely on the basis of a belief,” said Tuli.

Another geologist from Kurukshetra University, AR Chaudhari, said that he would visit the spots on Wednesday.

“Presence of water at such a low level is interesting, but it will be too early to jump to any conclusion about its connection with Saraswati. Situation demands analysis of the area before giving any opinion,” said Chaudhai, who had worked with the Oil and Natural Gas Commission (ONGC) in 2006 to explore water possibility along ancient Saraswati river course. Meanwhile, another expert, who wished not to be identified, said that finding water on upper clay level was common.

“The area where the water is spotted is located near the foothills and seasonal riveruet Som flows in its vicinity. It is quite possible that soil structure of the said region had retained water at the upper level due to the heavy presence of water flow,” said the expert.

SAFFRON LINK

For the past more than a decade, former Haryana Rashtriya Swayamsevak Sangh (RSS) chief and an industrialist from Yamunanagar Darshan Lal Jain has been instrumental in pursuing the case to revive Saraswati.

Saraswati no more a myth, water strikes at 7-feet depth

The Tribune 06.05.2015 P.No. 04

Truth unravelled

- The team working on reviving the Saraswati River in Yamunanagar district found strong water current on reaching a depth of seven-feet
- Water struck at nine points when the creek of the river was being dug at Mughalwali village
- Assembly Speaker Kanwar Pal Gurjar had inaugurated the excavation work of 'Saraswati Revival Project' at Rullaheri village on April 21
- The river length in Yamunanagar would be 55 km and would pass through 43 villages.
- It is believed that the river passes underground through Kurukshetra, Jind, Hisar, Fatehabad and Sirsa districts before entering Rajasthan and Gujrat.
- The project would promote eco-tourism, pilgrimage tourism, water conservation and improve ecological balance

Deputy Commissioner SS Phulia and District Development and Panchayat Officer Gagandeep Singh undertake digging work at Mughalwali village on Tuesday. A tribune Photograph

Shiv Kumar Sharma
Yamunanagar, May 5

It was a joyous moment for the team working on reviving the Saraswati River in Yamunanagar district as they found strong water current on reaching a depth of seven-feet today.

This has raised hopes for the entire project, which was receiving criticism from various planks who termed it an RSS ambition.

Assembly Speaker Kanwar Pal Gurjar had inaugurated the excavation work of 'Saraswati Revival Project' at Rullaheri village in Yamunanagar district on April 21.

After inauguration, the District Development and Panchayat Department had undertaken digging work in two-and-a-half-km area. Water struck at nine points when the creek of river was being dug at Mughalwali village on Tuesday.

"The water is potable, fresh in taste and sweet," said Deputy Commissioner SS Phulia, after a visit to the Mughalwali village.

The delighted people of the village offered prayers to Goddess Saraswati and distributed sweets amongst themselves and workers involved in the digging work.

District Development and Panchayat Officer Gagandeep Singh, who is coordinating the Saraswati Revival Project, said the river length in Yamunanagar district would be 55 km.

Earlier, plan was to dig the river till seven feet deep. However, now, they were planning to dig it till 10 feet deep for good natural flow of water. The river would pass through 43 villages of the district.

Chief Minister Manohar Lal Khattar has already announced Rs 50 crore for this project.

The credit to bring the Saraswati River on ground goes to 88-year-old RSS veteran Darshan Lal Jain. He had formed Saraswati Nidi Sodh Sansthan in 1999 and since then, has been struggling for its revival.

"Some people thought it to be a mythological fantasy but water found at 7-feet -deep in its creek has proved that the Saraswati River is flowing below the earth," said Darshan Lal Jain.

The river originates from Adi Badri in Yamunanagar. It is believed that the river passes underground through Kurukshetra, Jind, Hisar, Fatehabad and Sirsa districts before entering Rajasthan and Gujrat.

The DC said the project would prove to be a milestone in the development of this area as it would promote eco-tourism, pilgrimage tourism, water conservation and improve ecological balance.

मुस्लिम दंपती के फावड़े से सरस्वती का पुनर्जन्म

Dainik Jagaran 06.05.2015 P.No. 1

जागरण संवाददाता, यमुनानगर मुस्लिम दंपती सलमा और रफीक का फावड़ा जमीन पर क्या : पड़ा कि विलुप्त हो चुकी सरस्वती की धारा जल के रूप में बहने लगी। दोनों ने सोचा भी नहीं था कि उनका श्रमदान यमुनानगर के इतिहास में नया अध्याय जोड़ेगा। अधिकारियों से लेकर ग्रामीणों तक सभी ने दंपती को बधाई दी।1 वह दिन दूर नहीं जब विलुप्त हो चुकी सरस्वती का पानी धरती पर नदी के रूप में बहता दिखेगा। इसकी शुरुआत मंगलवार को हो गई है। बिलासपुर खं□ के मुगलवाली गांव में खुदाई के दौरान सरस्वती का पानी मिला। वह भी एक या दो नहीं बल्कि चार स्थानों पर। धरती से सरस्वती का पानी निकलने की खबर पूरे जिले में फैल गई और लोगों का जमावड़ा मुगलवाली में लग गया। □ीसी □ॉ . एसएस फूलिया और एस□ीएम बिलासपुर पूजा चांवरिया भी मौके पर पहुंचे। □ीसी ने पहले तो पानी का स्वाद चखा और फिर श्रमदान किया। प्रशासन की तरफ से मौके पर मौजूद लोगों में लड्□ बांटे गए। गत 21 अप्रैल को विधानसभा स्पीकर कंवरपाल गुर्जर व सरस्वती नदी शोध संस्थान के अध्यक्ष दर्शन लाल जैन ने रूहलाहेड़ी गांव में सरस्वती की खुदाई के कार्य का शुभारंभ किया था। □ीसी □ॉएसएस फूलिया . का कहना है कि सरस्वती का पानी इतनी जल्दी मिल जाएगा, यह उम्मीद नहीं थी।

6 यमुनानगर के मुगलवाली गांव में आठ फीट गहराई पर मिला पानी1

छोटे पत्थर और रेत भी निकला1जिस जगह से सरस्वती का पानी मिला है वहां से कंकरीट, छोटे पत्थर व रेत भी मिला है। ये इस बात का प्रमाण है कि जो पानी निकला है वो नदी का ही है। जिस वक्त खुदाई चल रही थी तब नीचे से नमी युक्त मिट्टी निकलने लगी थी। इससे अंदाजा लगाया जा रहा था कि बहुत जल्द ही पानी मिल जाएगा, लेकिन इतनी जल्द मिलेगा यह किसी को विश्वास नहीं था।1 14

परशासन का दावा, दस फुट की खुदाई में निकल रहा जल

यमुनानगर से फूट पड़ी सरस्वती की 'जलधारा'

अमर उजाला ब्यूरो P.No. 1 06.05.2015

यमुनानगर। सरस्वती की धारा को खोजने के वर्षों से चल रहे भगीरथ प्रयास अब सफल होते दिख रहे हैं। मंगलवार को यमुनानगर के आदिबद्री से पांच किलोमीटर दूर मुगलवाली गांव में सरस्वती के बहाव क्षेत्र में खुदाई के दौरान नदी का जल निकल आया। आठ से दस फुट की खुदाई में जगह-जगह पानी की धारा फूट पड़ी। जिला प्रशासन ने 21 अप्रैल से खुदाई शुरू करवाई थी। आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया चंडीगढ़ ने पुष्टि की है कि यमुनानगर में आदिबद्री के आसपास जो भी पानी मिल रहा है, वह सरस्वती नदी का ही है।

प्रशासनिक अफसरों का दावा है कि यहीं सरस्वती नदी बहा करती थी और यह जल सरस्वती का ही है। इतनी कम गहराई पर नीली बजरी, चमकदार रेत और खनिज के मिश्रण वाला यह पानी हूबहू नदियों में बहने वाले पानी की तरह लग रहा है। आला अधिकारियों ने इसकी पुष्टि के लिए यहां एक-एक करके करीब 10 गड्ढे खोदे और हर जगह समान अनुपात में पानी फूट पड़ा। मुगलवाली पहुंचे डीसी एसएस फुलिया और जिला प्रशासन के अन्य अधिकारी जमीन से निकले जल को देखकर रोमांचित हो उठे।

शेष पेज 21 पर

•ओएनजीसी निकालेगा सरस्वती नदी का जल ः

पेज 22

प्रचुर मात्रा में निकल रहा है पानी: डीडीपीओ

•डीडीपीओ गगनदीप सिंह ने बताया कि 15 दिनों के अंदर लगभग तीन किलोमीटर की खुदाई की जा चुकी है। सोमवार को कई जगहों पर पानी की बूंदे रिस रही थीं और मंगलवार को करीब आठ-दस फुट की गहराई पर प्रचुर मात्रा में पानी फुट पड़ा। उन्होंने बताया कि सरस्वती नदी के आसपास के नलकूपों में 85 फुट तक पानी नहीं है लेकिन यहां आठ-दस फुट पर पानी होना सरस्वती के प्रति एक नया विश्वास उत्पन्न करता है।

•21 अप्रैल को जिला प्रशासन की ओर से शुरू करवाई गई थी खुदाई

सरस्वती नदी की खुदाई के दौरान निकला पानी। मौके पर मौजूद डीसी और अन्य।

Punjab Kesari, 06.05.2015 P.No. 1

आखिर भगीरथ प्रयास हुए सफल, धरा पर आई सरस्वती

7 फुट की खुदाई से ही फूटी सरस्वती की धारा, 21 अप्रैल को सरकार द्वारा शुरू की गई थी सरस्वती की खुदाई

यमुनानगर/बिलासपुर, 5 मई (वीरेन्द्र/त्यागी): सदियों से भूगर्भ में बह रही सरस्वती नदी मंगलवार को सरस्वती नदी शोध संस्थान के प्रयासों से धरा पर बहनी शुरू हुई। 21 अप्रैल को प्रदेश सरकार द्वारा आदिबद्री क्षेत्र से सरस्वती नदी की खुदाई का कार्य शुरू किया गया था जिसका शुभारंभ विधानसभा अध्यक्ष द्वारा किया गया था। मंगलवार को जब गांव मुगलवाली के पास खुदाई का कार्य शुरू किया तो करीब 6 से 7 फुट की खुदाई पर ही सरस्वती की धारा फूट पड़ी। सरस्वती की धारा एक बार फिर धरा पर आते ही पूरे क्षेत्र में जश्न का माहौल पैदा हो गया।

जैसे ही यह समाचार जिला प्रशासन को मिला तो जिला उपायुक्त एस.एस. फुलिया सहित जिले के सभी आला अधिकारी मौके पर पहुंचे और शुरू हुआ एक-दूसरे को बधाई देने का दौर। जिसने भी यह समाचार सुना वह बहती धारा के पहले दर्शन करने दौड़ पड़ा। सरस्वती नदी शोध संस्थान के अध्यक्ष दर्शन लाल जैन जोकि सरस्वती को इस धरा पर लाने के लिए भगीरथी प्रयास कर रहे थे का सपना पूरा हुआ। दर्शन लाल जैन ने (शेष पृष्ठ 2 कालम 6 पर)

खुदाई के दौरान फूटी सरस्वती की धारा। (छाया)

Wed, 06 May 2015
epaper.punjabkesari.in/c/519427